



प्रक्रिया

शुरुआत : 1 अक्टूबर 2007, शाम 4 बजे, शाहूजी धर्मशाला, राजनांदगांव। निर्मल आग्रह अभियान की तैयारी कार्यशाला के सहभागियों के पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया है। शाम 7 बजे तक कोई चालीस सहभागी अपनी उपस्थिति दर्ज कर चुके हैं। इनमें पुरुष और महिलाएं लगभग बराबर की संख्या में हैं और अलग-अलग समूहों में हैं।

औपचारिक परिचय के बाद सहभागियों को तालमेल और सूझबूझ की महत्ता का रेखांकन करते प्रेरणादायक खेल से गुजारा गया। यह पुरुष-महिलाओं को करीब लाने और उनकी झिझक दूर करने का भी पहला कदम था। इसी बीच कार्यशाला का बैनर पहुंचा और चर्चा का विषय बन गया। विचार बना कि मिलजुल कर नया बैनर तैयार किया जाये। तरीका निकला कि अखबारों को परत-दर-परत जोड़ कर बड़े आकार की शीट तैयार हो और बैनर की लिखावट का इस्तेमाल करते हुए उसे नये बैनर में बदला जाये। आनन-फानन जरूरी सामग्री जुटायी गयी और कुछेक सहभागी बैनर निर्माण में जुट गये। बाकी क्या करें ? चलो, अंताक्षरी खेली जाये। बैनर बनाया जा रहा है और दो समूह अंताक्षरी में एक-दूसरे को पछाड़ देने में जुटे हैं, खुद को खोल रहे हैं और दूसरे से जुड़ रहे हैं। बीच-बीच में किसी गीत के बहाने थोड़ी चर्चा भी—कभी जानकारी के स्तर पर और कभी चिंतन के स्तर पर। जब-तब किसी प्रेम गीत को लेकर हंसी-मजाक भी। इसके अलावा तैयार किये जा रहे बैनर को लेकर राय-मशविरा भी। बैनर पूरा होने तक बस सात सहभागी मैदान में।

यह कार्यशाला का आइस ब्रेक सत्र है और रात डेढ़ बजे तक जारी है। यह सहभागियों की मर्जी पर है कि वे सत्र के समापन तक इसमें शामिल रहें या बाहर रहें।

पहला दिन : बैनर पूरा होने तक जुटे रहे सहभागियों द्वारा सुबह से ही बैनर को टांगे जाने का जुगाड़, बाकायदा उसकी फ्रेमिंग के साथ। सुबह 11 बजे तक कोई अस्सी लोगों की उपस्थिति। परिचय सत्र। इसी क्रम में चरणबद्ध त्वरित चर्चाओं के जरिये कार्यशाला के सहभागियों के चयन की माथापच्ची। शिक्षा अथवा अनुभव कोई महत्वपूर्ण पैमाना नहीं। सहजता पहली पात्रता। दोपहर के भोजन तक सहभागियों के चयन की प्रक्रिया पूरी, लेकिन उम्मीदवारों का आना इसके बाद भी जारी। चयनित सहभागियों के नामों की घोषणा के बाद बाकी लोगों की विदाई। दोपहर ढलने पर कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन—गांधीजी की तस्वीर पर माल्यार्पण, आजादी का आंदोलन और सत्याग्रह की याद, मौजूदा चुनौतियों का हवाला, निर्मल आग्रह अभियान की अहमियत और जरूरत का रेखांकन। उद्घाटन की इस औपचारिकता के बाद पारस्परिक परिचय और दोस्ताना

रिश्तों के विकास के सत्र। संपूर्ण स्वच्छता अभियान के आशयों और निर्मल आग्रह की अवधारणा को लेकर विचार-विमर्श। युनिसेफ प्रकाशनों से लिये गये रेखांकनों के सहारे खास तौर पर निर्मल आग्रह की तैयारी कार्यशाला के लिए निर्मित की गयी फिल्म का प्रदर्शन। गीत-संगीत का अनौपचारिक सत्र रात 10.30 से 12 बजे तक।

दूसरा दिन : निर्मल आग्रह पुस्तिका का छोटे समूहों में पाठ, भाषागत स्पष्टीकरण और उसके आशयों का विस्तार। विचार मंथन का सिलसिला—जैसे सत्याग्रह का तत्व और मर्म। निर्मल आग्रहियों के व्यक्तित्व, निजी व्यवहार और आपसी तालमेल का अभियान की सफलता से रिश्ता। अभियान की चुनातियां, मित्र और अवरोधक शक्तियां। शारीरिक बंधेपन को खोलने और बेझिझक बोलने की कवायद। पुतुल कला के ऐतिहासिक विकास क्रम का ब्यौरा और मौजूदा दयनीय स्थिति का चित्रण। अभियान के पुतुल किरदारों से परिचय। रात 11 से 1 बजे तक सहभागियों के साथ बातचीत का अनौपचारिक सत्र—उनके सामाजिक परिवेश, पारिवारिक परिस्थितियों, मनःस्थिति, क्षमताओं और संभावनाओं का जायजा।

तीसरा दिन : अभियान के प्रारूप के विकास की प्रक्रियाएं। प्रत्येक गांव में अभियान के तीन दिवसीय पड़ाव की गतिविधियों की परिकल्पना। पपेट और मपेट किरदारों के विविध और प्रभावी उपयोग पर विमर्श। पपेट संचालन का रियाज। निर्मल गीत का सृजन, उसका छत्तीसगढ़ी रुपांतरण और धुन संयोजन। बड़े और छोटे समूहों में अभ्यास की श्रृंखला। रात 10 बजे से 12 बजे तक चुनिंदा सहभागियों के साथ अनौपचारिक संवाद, अगुवा भूमिका में उतरने के लिए उनका प्रोत्साहन।

चौथा दिन : खास कर माहवारी के दौरान लड़कियों और महिलाओं की निजी साफ-सफाई के सवाल को भी संबोधित किये जाने के प्रस्ताव पर सहमति का निर्माण। इस सवाल पर समझ का विकास। महिलाओं और लड़कियों के बीच इसके संप्रेषण के तरीकों पर विचार। दोपहर बाद रायपुर से आये विशेषज्ञ द्वारा शौचालय संबंधी जानकारीयों की साझेदारी। शाम के सत्र से निर्मल आग्रह अभियान की विषयवस्तु पर वापसी—अभियान की तयशुदा गतिविधियों के संचालन संबंधी पक्षों पर चर्चा। बच्चों का अखबार निकालने से जुड़ी बुनियादी जानकारीयों और बाल अभिव्यक्तियों की बारीकियों की साझेदारी। अखबार निकालने की प्रक्रिया का अभ्यास—समाचार लेखन, चयन, खबरों का प्राथमिकीकरण और तब अखबार का लेआउट। चार समूहों में यह सिलसिला रात 12 बजे तक सामूहिक रूप से कार्यशाला स्थल पर और उसके बाद भी सहभागियों के कमरों में जारी। निर्मल गीत का लगातार अभ्यास।



पांचवां दिन : सुबह से अखबार को अंतिम रूप दिये जाने की तैयारी। चार समूहों में विकसित किये गये अखबारों का प्रस्तुतिकरण और उसकी समीक्षा। अतिथि विशेषज्ञ द्वारा शौचालय संबंधी और हाइजीन किट से जुड़ी जानकारीयों की साझेदारी, और शौचालय निर्माण के तरीकों पर आधारित चित्रों का प्रदर्शन। निर्मल गीत का लगातार अभ्यास। रात 11 बजे से 2.30 बजे तक अनौपचारिक सत्र—निर्मल आग्रह की विषयवस्तु पर केंद्रित बच्चों के खेल गीतों का सृजन, संवर्धन और पांच गीतों का चयन।

छठा दिन : खेल गीतों का अभ्यास। निर्मल आग्रह अभियान की 20 सदस्यीय रीढ़ और आठ परिवारों का गठन और नामकरण। सभी परिवारों की मुखिया लड़कियां और जो रीढ़ का हिस्सा भी। खास कर मुखियाओं समेत रीढ़ के सदस्यों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बावत विमर्श। आठों परिवारों द्वारा मंचीय अभियक्तियों के विकास की भी कोशिशें, लेकिन आखिरकार उस पर विराम। हालांकि अभियान की समापन गतिविधि के नाटकीय स्वरूप का निर्धारण और उसका अभ्यास। बीच-बीच में निर्मल गीत समेत खेल गीतों का भी लगातार अभ्यास। रात 12 बजे से 2 बजे तक अनौपचारिक सत्र—संबंधित सवालों पर चर्चा, कार्यशाला का फीड बैक, राय-मशविरा और सुलह-सफाई।

सातवां दिन : आठ परिवारों द्वारा अभियान की गतिविधियों से संबंधित अभ्यास और उसके संवर्धन की लगातार प्रक्रिया। रात 10 बजे तक अभियान से जुड़े विविध पक्षों को लेकर विमर्श और अभ्यास का सिलसिला जारी। इसके बाद रात 2.30 बजे तक अभियान से संबंधित सामग्रियों का वितरण और पैकिंग।

आठवां दिन : नियत समय पर सुबह 7 बजे लगभग सभी निर्मल आग्रही गांव के लिए कूच करने को तैयार। लेकिन वाहन समेत कुछेक दूसरे जरूरी बंदोबस्त के चलते 10 बजे प्रस्थान। बीच रास्ते में जलपान। एक से दो बजे तक पहले से तय छह गांवों में अभियान के आठ निर्मल आग्रही परिवारों का प्रवेश। इम्तहान शुरु। इसी के साथ परिवारों की गतिविधियों और उनकी समस्याओं का हालचाल लेने और आवश्यकतानुसार सलाह-मशविरा करने का सिलसिला भी शुरु और रात 11 बजे तक जारी।

नौवां दिन : सुबह छह बजे से अभियान के निर्मल आग्रही परिवारों और उनकी गतिविधियों का हालचाल लिये जाने का सिलसिला शुरु। रात के अनुभवों के आधार पर एक अदद परिवार का दूसरे कमजोर परिवार में फौरी विलय। रात 10 बजे सभी परिवारों का मिलन। अब तक के अनुभवों, गलतियों और सीखों का आदान-प्रदान। रात 12.30 बजे संबंधित गांवों में परिवारों की वापसी।



दसवां दिन : सुबह छह बजे से अभियान का जायजा लिये जाने का सिलसिला शुरु। दोपहर बाद चौकी से आवाज़ टीम का प्रस्थान। रास्ते में युनिसेफ की राज्य प्रतिनिधि और परियोजनाधिकारी से भेंट और संक्षिप्त चर्चा। अभियान की विधिवत शुरुआत के पहले पड़ाव के दौरान चार दिवसीय फालो अप यात्रा किये जाने का फैसला।

अभियान की गतिविधियां

पहला दिन :

सुबह 10 बजे के आसपास गांव प्रवेश। जिम्मेदार और प्रभावशाली व्यक्तियों (सरपंच समेत पंचायत सदस्य, शिक्षक, महिला-किशोरी और युवा संगठनों के सदस्य, पुजारी, बैगा आदि) से भेंट-मुलाकात। स्थानीय साथियों की पहचान। शाम को स्थानीय साथियों और बच्चों के साथ निर्मल गीत का गायन, और जो क्रमशः उन्हीं के हवाले। आखिरकार, पपेट-मपेड किरदारों और निर्मल ध्वज के साथ गांव का भ्रमण, आम जनों से संपर्क और संवाद। बीच-बीच में निर्मल गीत की गूंज।

दूसरा दिन :

दिन में स्कूली बच्चों के साथ दोस्ती, गपशप के साथ साफ-सफाई से जुड़ी बातचीत और खेल गीतों का रियाज। जब-तब निर्मल गीत का गायन। बच्चों का अखबार निकाले जाने की योजना पर चर्चा, खबर जुटाने-लिखने संबंधी जिम्मेदारियों का बंटवारा। महिलाओं, किशारियों और युवाओं के साथ अनौपचारिक अंदाज में अभियान की विषयवस्तु पर बातचीत। शाम को समुदाय के साथ 'शर्म का दौरा' नामक अभ्यास (चार्ट पर पानी के स्रोत समेत गांव का मानचित्रीकरण, और तब शौच के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले स्थलों का चिन्हाकन) कि किस तरह हर रोज गांववाले एक-दूसरे की टट्टी चखते हैं। इस दौरान भी निर्मल गीत जारी। समुदाय के साथ बैठक।

तीसरा दिन :

दिन में बच्चों द्वारा तैयार की गयी खबरों का चयन, प्राथमिकीकरण और अखबार के तौर पर उसका प्रस्तुतिकरण। समूह और निजी स्तर पर चर्चाओं का सिलसिला। शाम को अखबार का विमोचन और समुदाय के प्रतिनिधियों का उद्बोधन। निर्मल आग्रह के स्वीकार और व्यवहारगत बदलाव के संकल्प के तौर पर कपड़े की सफेद पट्टी पर हाथों के रंग-बिरंगे छापे लगाने का कार्यक्रम। आखिरकार निर्मल गांव बनाये जाने की प्रतिबद्धता की याद दिलाते निर्मल ध्वज का सामूहिक आरोहण। बीच-बीच में निर्मल गीत जारी।

अगली सुबह गांव से विदाई और दूसरे गांव की ओर प्रस्थान।

फालो अप

अभियान के लिए कूच करने से पहले निर्मल आग्रहियों को 'सरकारी अपेक्षाओं का हुक्मनामा' सुनाया गया कि उन्हें यह सर्वेक्षण पूरा करना है कि गांव में कितने शौचालयों का निर्माण हो चुका है, कितने इस्तेमाल किये जा रहे हैं, गरीबी की रेखा के नीचे या ऊपर के कितने परिवार हैं, वगैरह-वगैरह। यह अभियान की कार्य सूची का हिस्सा नहीं था, बल्कि अभियान की अवधारणा से ठीक उलट था और बड़े बोझ की तरह था। निर्मल आग्रही कशमकश में पड़ गये। इसका सीधा हल सुझाया गया कि आखिर निर्मल आग्रहियों को गांवों में अभियान के साथी भी बनाने हैं, जिनके जरिये अभियान की दस्तक को बरकरार रखे जाना है तो यह जिम्मेदारी उन्हें भी सौंपी जा सकती है और इस तरह उनकी अगुवाई का रास्ता भी खोला जा सकता है।

निर्मल आग्रही परिवार के कुछेक सदस्यों ने अपनी सुविधानुसार परिवार बदल लिये। एक परिवार से दूसरे परिवार में यह स्वतः स्थानांतरण अराजकता की शुरुआत थी। खैर, पहले ही दिन, देर रात तक परिवारों की पूर्व स्थिति बहाल कर दी गयी।

दूसरे दिन सुबह 8 बजे से निर्मल आग्रही परिवारों की गतिविधियों पर निगाह डालने और उसे तराशने का काम शुरू हो गया। रात 10 बजे सभी निर्मल आग्रही परिवार समीक्षा बैठक के लिए बीच के गांव में कोई डेढ़ घंटे के लिए जुटे। अनुभवों को साझा किया गया। गलतियां भी स्वीकारी गयीं और उससे सबक लेने की बानगी भी पेश की गयी। समीक्षा बैठक के बाद चार-चार परिवारों की देखभाल के लिए (बहुआयामी क्षमता के आधार पर) नामित दो निर्मल आग्रहियों के सामने साझा



मुखिया की भूमिका अदा करने का प्रस्ताव रखा गया और उनकी सहमति हासिल की गयी। नयी जिम्मेदारी को लेकर सूत्रबद्ध बातचीत हुई कि वे परिवारों के सहयोगकर्ता होंगे, कि परिवारों की स्वायत्तता में दखल नहीं देंगे, कि इसके लिए उन्हें कहीं ज्यादा मेहनत करनी

होगी, कि उन्हें कोई अतिरिक्त सुविधा या मानदेय प्राप्त नहीं होगा, कि उन्हें हर दिन किसी एक परिवार के साथ गुजारना होगा, वगैरह-वगैरह। इस बदलाव के कारण संबंधित परिवार के अगले मुखिया के तौर पर कार्यशाला के दौरान धारा प्रवाह बोलने में माहिर बने नवयुवक का नाम तय हुआ। यह राय भी बनी कि समझदारी के स्तर पर बेहद कमजोर साबित हो रहे सदस्यों को बरकरार रखना अभियान के हित में नहीं, इसके लिए जरूरी कांटछांट कोई निर्ममता भी नहीं।

आवाज़ के सुगमकर्ताओं ने अभियान के पूर्वाभ्यास और इस शुरुआती पड़ाव के दौरान भी एक परिवार को बेहद सुस्त और उसके कामकाज का स्तर बहुत नीचा देखा। और आखिरकार उसे भंग कर पुर्नगठित किये जाने का खाका तैयार किया। मुखिया के तौर पर रीढ़ के पुरुष सदस्य का नाम स्वीकृत किया गया और उसके परिवार से इसकी सहमति ली गयी।

तीसरे दिन सुबह 7 बजे यह प्रस्ताव तब तक उपस्थित चार परिवारों की मुखियाओं के साथ साझा किया गया और उसे लागू किये जाने का फैसला हुआ। रायपुर में आयोजित राज्योत्सव में निर्मल

आग्रह अभियान के प्रतिनिधित्व के लिए सुगमकर्ताओं ने दो परिवारों को चुना और इस जिम्मेदारी को लेकर उनसे अतिरिक्त बातचीत की। शाम को युनिसेफ, रायपुर में ताजा अवलोकन और भावी हस्तक्षेपों को लेकर बिंदुवार संक्षिप्त चर्चा हुई।

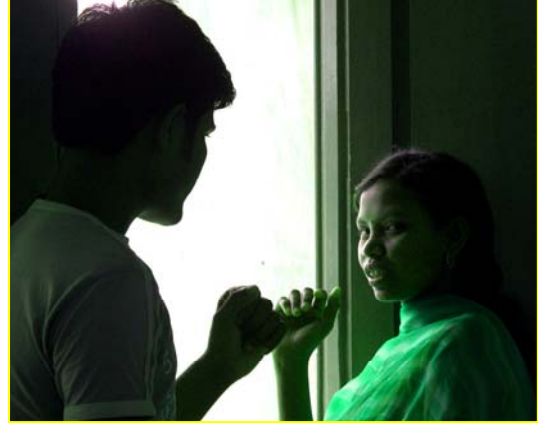
लखनऊ वापसी के बाद फोन संपर्क के जरिये निर्मल आग्रह अभियान और उसके परिवारों का हालचाल लेने और आवश्यकतानुसार सलाह-मशविरा देने का सिलसिला लगातार जारी रहा, राज्योत्सव में अभियान के प्रतिनिधित्व के दौरान भी और दीवाली के अवकाश पर जाने से ठीक पहले हुई बैठक के समय भी।

अब तक का परिदृश्य बताता है कि पहली जरूरत निर्मल आग्रह अभियान को उसकी अवधारणा से सही अर्थों में एकरूप बनाने और उसे ठोस आकार दिये जाने की है। निर्मल आग्रह के सिपाहियों में निर्मलता के रंग का पक्का होना अभी बाकी है—कि वे अपने ज्ञान, जानकारी, अनुभव और कौशल पर इतराने, दूसरों को कमतर समझने और उन पर हुकुम चलाने की प्रवृत्तियों या फिर हीन भावना से उबर सकें, निजी पसंद/नापसंद की जिद छोड़ सकें और धारदार बन सकें। जरूरत के मुताबिक निर्भीक निर्णय कर सकें और उसे लागू करने का हौसला भी रख सकें। निर्मल आग्रह के इस प्रयोग को जन अभियान का दर्जा भी तभी दिया जा सकता है। निर्मल आग्रह महज साफ-सफाई तक सामित नहीं रह सकता। साफ-सफाई तो उसका शुरुआती कदम है। इसका विस्तार दिमागी कचड़े की साफ-सफाई के अभियान तक जाता है, जहां से एकजुटता और सामूहिक पहल के दरवाजे खुलते हैं, और जिसके जरिये बाल अधिकारों की हिमायत और हिफाजत की संस्कृति के गीत उभरते हैं। और याद रहे कि कोई अचानक नहीं बदल जाया करता या कि तेज चाल का आदी नहीं हो जाता। अभियान की नियमित देखभाल, खाद-पानी और रोशनी इसलिए जरूरी है।



प्रमुख बिंदु

निर्मल आग्रह अभियान की तैयारी कार्यशाला में सहभागी पुरुषों और महिलाओं के बीच के फासले को घटाना, उनके बीच दोस्ताना रिश्ता कायम करना और उसे मर्यादित रखना भी महत्वपूर्ण कार्यभार का हिस्सा था। यह कार्यभार अभियान की कारगर पहुंच के लिए जरूरी था। इस रोशनी में स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के फर्क को व्याख्यायित और स्थापित किये जाने की सचेत कोशिश की जाती रही, किसी किस्म के अंकुश के बजाय संयम और संतुलन पर जोर दिया जाता रहा। निर्मलता को प्रेम के स्वाभाविक गुण के तौर पर, और प्रेम को सहयोग, सौहार्द, समर्पण और स्वाभिमान जैसे मूल्यों के ऊर्जा स्रोत के तौर पर रेखांकित किया जाता रहा। सामूहिक और व्यक्तिगत स्तर पर भी।



कार्यशाला को एक-दूसरे से सीखने और सिखाने की प्रक्रिया के तौर पर संयोजित किया गया। ऐसा माहौल विकसित किया गया कि खुले मन से अपनी भावनाएं या शिकायतें दर्ज की जा सकें। आलोचनाओं के दायरे से सुगमकर्ता भी बरी नहीं थे। कहना चाहिए कि कार्यशाला दिल और दिमाग की साफ-सफाई के अभियान से भी गुजरी।

परिवार प्रेम के धागे से मजबूत बनता है, सामूहिक जिम्मेदारी और व्यक्तिगत जवाबदेही से गुजर कर आगे बढ़ता है। इसीलिए अभियान के क्रियान्वयक दलों को निर्मल आग्रही परिवार नाम दिया गया। आखिर नेता अपने दल/समूह का प्रभारी होता है, जबकि मुखिया अपने परिवार का हितचिंतक माना है। नेता अपने दल/समूह से अधिकाधिक त्याग-बलिदान की मांग करता है, जबकि मुखिया अपने परिवार के लिए सबसे पहले खुद इसकी मिसाल पेश करता है। अभियान के बेहतर संचालन के लिए आदर्श परिवार की अवधारणा पर खास जोर दिया गया—जहां कमजोर सदस्य को मजबूत बनाये जाने को वरीयता देती लोकतांत्रिकता है, मनमुटाव और गलतफहमियों की गांठ खोलने की व्याकुल तत्परता है और इक-दूजे की स्वाभाविक चिंता है।

ज्यादातर समाजों में परिवार का मुखिया पुरुष होता है, लेकिन निर्मल आग्रह अभियान के परिवारों की बागडोर महिलाओं को सौंपी गयी। इसलिए कि पुरुषों के मुकाबले महिलाएं स्वभाव से ही कहीं अधिक संवेदनशील, समर्पित, क्षमाशील और धैर्यवान होती हैं। इसलिए भी कि महिलाएं प्रबंधन में उस्ताद होती हैं, लेकिन उनके इस सहज गुण को स्वीकार और सम्मान नहीं मिल पाता। इसलिए भी कि घरों में अंदर तक घुसपैठ करना और बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को अपना बना लेना उनके लिए बहुत आसान होता है। इसलिए भी कि शौचालय के सवाल को सबसे पहले खास कर महिलाओं की निजता और गरिमा से जोड़ कर उठाया जाना है, उनकी निजी साफ-सफाई की जरूरत को लोक लाज की परिधि से बाहर लाया जाना है, रोग-बीमारी का सवाल तो तुरंत बाद का है। और इसलिए भी कि निर्मल आग्रह अभियान को मर्दवाद के पूर्वाग्रहों और लिंगीय भेदभाव से मुक्त रखा जाना है, कि आधी आबादी की बेहतरी और मजबूती के सवाल को सतह पर लाया जाना है। लेकिन महिलाओं की अगुवाई कोई आरक्षण भी नहीं—बाद में दो परिवारों का मुखिया पुरुषों को बनाया गया और दो साझा मुखियाओं में महिला और पुरुष दोनों को रखा गया।

कार्यशाला में अनुशासन के बजाय स्वानुशासन को तरजीह दी गयी। यह सहभागियों में निर्मल आग्रह अभियान के प्रति दायित्व और समर्पण का स्वतःस्फूर्त बोध कराने, और उनके व्यक्तित्व को निखारने का तरीका था। समय निर्धारण समेत कार्यशाला के पूरे संचालन में सहभागियों के सामूहिक फैसले सर्वोपरि

थे और जिसका पालन करना सभी का कर्तव्य था। लेकिन उसमें देरी या ढिलाई के लिए कोई उलाहना नहीं, केवल कर्तव्यों का स्मरण था। इस विचार को महत्ता दी गयी कि दिखावे के लिए या किसी मजबूरी या दबाव में काम करना व्यक्तित्व के विकास के लिए उचित नहीं। इसीलिए आनंद की अनुभूति और अंतःप्रेरणा को कार्यशाला का रेफरी बनाया गया और अभियान को भी इसी ताल में और उत्सवी अंदाज में संचालित किये जाने की दिमागी तैयारी की गयी।

कार्यशाला के सुगमकर्ता शुरुआत से आखीर तक चौबीसों घंटे सहभागियों के साथ रहे, इसमें गांव स्तर पर किया गया अभियान का तीन दिवसीय पूर्वाभ्यास भी शामिल है। यह सहभागियों के साथ करीबी रिश्ता बनाने, उन्हें समझने-समझाने और सामाजिक व्यवहार के स्तर पर भी उन्हें बदलने की कोशिशों के तौर पर था। औपचारिक सत्र (10 से 12 बजे रात तक) के बाद के अनौपचारिक सत्र मुख्यतः इसी गरज से थे और जो सृजन के भी सत्र थे।

तमाम जागरुकता अभियान कुछ इस अंदाज में चलाये जाते हैं, गोया कि गांव के लोग नासमझ हों और जिन्हें समझदारी का पाठ पढ़ाया जाना है। इसके उलट कार्यशाला में समझदारी का यह पहला सबक था कि अनपढ़ होना या गैर जानकार होना नासमझी का लक्षण नहीं है, कि केवल जानकारी हासिल करा देने भर से उस पर अमल की गारंटी नहीं ली सकती, कि सर्वज्ञ या मसीहाई छवि से मुक्त होकर ही आम लोगों के साथ घुला-मिला जा सकता है, कि तभी समुदाय के सवालों और शंकाओं को जाना-समझा जा सकता है, कि समुदाय का भरोसा जीतने और उसे अभियान के मकसद से जोड़ने का यही नुस्खा है।

बेशक, यह सच है कि निर्मल आग्रह अभियान का संचालन सरकारी ढांचे के साथ तालमेल करते हुए किया जाना है, लेकिन जमीन पर अपने तेवर और तरीकों से उसे गैर सरकारी आकार और जन अभियान का दर्जा दिया जाना है। मानसिक और रणनीतिक तौर पर इस दोतरफा चुनौती से गुजरने के लिए कार्यशाला के सहभागियों को तैयार किया जाता रहा। इसी कड़ी में गांव स्तरीय निर्मल आग्रहियों की पहचान करने और उनका साथ-सहयोग हासिल करते हुए उनकी भावी सक्रियताओं की जमीन तैयार किये जाने का कार्यभार भी अभियान की गतिविधियों में शामिल किया गया। ताकि अभियान की दस्तक सरकारी परियोजना के दायरे से बाहर निकल कर आगे भी जारी रह सके और अपने मकसद को फलीभूत कर सके। कि यह दस्तक व्यापक अर्थों में सामाजिक चेतना की निर्मलता की भी तरंग छेड़ सके, और आखिरकार समुदाय की बेहतरी और मजबूती के लिए एकजुटता और सामूहिक पहल की निरंतरता का आधार बन सके। इसी परिप्रेक्ष्य में गांववालों के जरिये निर्मल आग्रही परिवारों के रहने-खाने की व्यवस्था को अभियान की सफलता के प्रमुख सूचक के तौर पर रखा गया—इस हवाले के साथ कि भारतीय संस्कृति में भोजन का न्यौता स्वागत और स्वीकार्यता का प्रतीक है।

आइस ब्रेक का सत्र सहभागियों और सुगमकर्ताओं के बीच की दूरी के अलावा हिंदी के वर्चस्व को भी तोड़े जाने की शुरुआत थी। हिंदी का उपयोग केवल सुगमकर्ताओं और कार्यशाला के आयोजन से जुड़े लोगों तक सीमित रहा। कार्यशाला के तीसरे दिन से छत्तीसगढ़ी का प्रभुत्व जमने लगा, और जिसने जाहिर है कि सहभागियों को अधिकाधिक सहज बनाने और उनकी सहभागिता बढ़ाने में बड़ी भूमिका अदा की। यह मातृभाषा की ताकत का नमूना है। इस तरह अभियान की शकल छत्तीसगढ़ी संस्कृति के मिजाज से एकरूप होकर उभरी। मसलन, शौचालय से सचिवालय का भ्रम होता है, लेकिन अभियान में शौच के बजाय टट्टी और शौचालय के बजाय टट्टीखोली थी या कि संपूर्ण स्वच्छता के बजाय पूरी सफाई थी। यह अभियान की संप्रेषणीयता की मांग थी।

निर्मल आग्रहियों को खास कर परिवार के मुखियाओं को हर रोज अभियान के अनुभवों की डायरी लिखने के लिए तैयार किया गया।

निर्मल आग्रह

सीधे कहें तो निर्मल सत्याग्रह का संबोधन अखरता है। इससे लगता है कि गोया कोई सत्याग्रह निर्मल नहीं भी हो सकता है। यह सत्य नहीं है। सत्याग्रह स्वयं में निर्मल होता है, निर्मलता के साथ होता है। निर्मलता नहीं तो सत्याग्रह भी नहीं। निर्मल आग्रह ही दरअसल सत्याग्रह है। गांधीजी कभी 'पैसिव रेजिस्टेंट' (निष्क्रिय प्रतिरोध) शब्द का इस्तेमाल किया करते थे। लेकिन उन्हें यह संबोधन लज्जाजनक महसूस हुआ और उन्होंने आंदोलन का नाम सुझाने के लिए बाकायदा अपने अखबार 'इंडियन ओपीनियन' में विज्ञापन प्रकाशित किया। मगनलाल गांधी नामक नौजवान का सुझाया नाम सदाग्रह सर्वसम्मति से चुना गया। लेकिन गांधीजी बेहतर से बेहतर नाम की तलाश में थे, जो स्वयं में आंदोलन का पूर्ण परिचय हो। सद से आगे बढ़ा तत्व सत्य है और जिसमें सद का भाव समाहित है। इसलिए गांधीजी ने सत्याग्रह शब्द को चुना। सच यह भी है कि गांधीजी के बाद सत्याग्रह शब्द का जबरदस्त दोहन हुआ है, उसके साथ भोंड़ा मजाक हुआ है। सच यह भी है कि समय के साथ कुछेक शब्द अपने अर्थ की धार खोने लगते हैं, और अक्सर उल्टे अर्थ देने लगते हैं। जैसे, नेताजी के संबोधन से सैनिक वर्दीवाले सुभाष चंद्र बोस की नहीं, वोट-नोट के धंधेबाजों की छवियां उभरती हैं। जैसे, भगत सिंह को इस तरह पेश किया गया कि उनके भविष्यदर्शी विचार पीछे चले गये और उनकी पहचान बम-पिस्तौल तक सिमट गयी। जैसे वासना शब्द को इस कदर रगड़ा गया कि अति महात्वाकांक्षा का उसका भाव केवल शारीरिक भूख पर टिक गया।

ऐतिहासिक कारणों से सत्याग्रह के साथ विदेशी हुकूमत की अवज्ञा का बिंब नत्थी है। फिर सत्याग्रह शब्द का सरकारीकरण भी कम नहीं हुआ है। हालत यह है कि अब सत्याग्रह से किसी जनांदोलन का बोध नहीं होता, बल्कि लोकप्रियता हासिल करने का स्वांग का दृश्य कौंधता है। हमें अपने अभियान का सही परिचय देना नाम तय करना चाहिए। निर्मल आग्रह स्वयं में अपने अर्थ का पूरा बयान है।

निर्मल आग्रही इस अभियान के सूत्रधार हैं, निर्मल आग्रह की अवधारणा के सारथी हैं, सोच और व्यवहार में बदलाव के वाहक हैं। उनके लिए प्रेरक का संबोधन हल्का है। जैसे सत्याग्रह के तुक में निर्मल आग्रह है, उसी तरह सत्याग्रही के तुक में निर्मल आग्रही है। उन्हें निर्मल आग्रही होना चाहिए, 'स्वच्छता का प्रचारक' नहीं। यह परंपरागत परिचय अभियान की दिशा से मेल नहीं खाता और सरकारीपन का आभास कराता है। ऐसे संबोधनों से निर्मल आग्रहियों को बचाया जाना चाहिए। अभियान की सही और पूरी पहचान के लिए यह जरूरी है।

प्रस्ताव

प्राथमिक कार्यभार अभियान की प्रभावोत्पादकता और निर्मल आग्रहियों के आत्मविश्वास और उत्साह को उन्नत किये जाने का है। इसके लिए अभियान का हर माह जायजा लिया जाये, निर्मल आग्रहियों की संप्रेषणगत या अन्य समस्याओं को साझा किया जाये और उन्हें हल करने की दिशा में बढ़ा जाये। नये प्रयोगों को गढ़ा और आजमाया जाये, उसे तराशा जाये। निर्मल आग्रही परिवारों की क्षमता और समझ में इजाफा किया जाये। आपसी सहयोग और विश्वास की भावना विकसित की जाये। सकारात्मक प्रतिस्पर्धा को गति दी जाये और अभियान के आठों परिवारों के बीच तालमेल बनाया जाये। संभावनापूर्ण आग्रहियों की पहचान करते हुए उनके साथ अतिरिक्त संवाद स्थापित किया जाये। परिवारों को तीन सदस्यों तक सीमित करने की दिशा पकड़ी जाये। यह कार्यभार हर माह सात दिनों की मांग करता है।

निर्मल आग्रह अभियान को विस्तारित और घनीभूत करने के लिए उसके परिवारों की संख्या दोगुनी की जाये, जो फिलहाल अभी कुल आठ हैं। इसके लिए एक और कार्यशाला का आयोजन किया जाये। तैयारी के तौर पर दो अन्य ब्लाकों का दौरा किया जाये, विभिन्न हितभागियों से संपर्क किया जाये, उनके जरिये युवा प्रतिभाओं की पहचान की जाये और उन्हें अपनी उम्मीदवारी पेश करने के लिए आमंत्रित किया जाये। प्रत्येक ब्लाक में यह दस्तक तीन दिवसीय हो। निर्मल आग्रहियों का चयन चरणबद्ध प्रक्रिया से हो। निश्चित अंतराल पर दोनों ब्लाक में एक-एक दिवसीय अनौपचारिक मिलन का कार्यक्रम आयोजित हो और जिसमें अगली प्रक्रिया के सहभागी चुने जायें। उन्हें लेकर तीन दिवसीय प्राथमिक कार्यशाला का आयोजन किया जाये ताकि वे निर्मल आग्रह की अवधारणा से परिचित हो सकें और उसके मुताबिक ढलने के लिए खुद को तैयार कर सकें। इस कार्यशाला की कसौटी पर खरे उतरे सहभागियों को समूहों में बांट कर अभियान के आठ निर्मल आग्रही परिवारों के साथ तीन दिवसीय पड़ाव का साझीदार बनाया जाये। ताकि वे अभियान के अभियान के जमीन स्तरीय अनुभवों से गुजर सकें। उनके अपने अनुभवों और अभियान की रीढ़ की सिफारिशों की रोशनी में कार्यशाला के सहभागियों का चयन किया जाये। आखिरकार पांच दिवसीय मुख्य कार्यशाला का आयोजन हो, जिसके जरिये निर्मल आग्रहियों को चयनित और तैयार किया जाये। चौकी अभियान के चुनिंदा चार निर्मल आग्रहियों को इस प्रक्रिया के संयोजन में साझीदार बनाया जाये। कोई 20 दूसरे निर्मल आग्रहियों को कार्यशाला का सहभागी बनाया जाये। अंतिम पांचवें दिन अभियान के संचालन और समन्वयन की रणनीति तय की जाये और जिम्मेदारियों का बंटवारा हो। कार्यशाला के जरिये अभियान के पुतुल किरदारों का आकार छोटा किया जाये, यथासंभव बाकी दूसरी सामग्रियों का बोझ भी हल्का किया जाये। अंततः नये रंग-रूप में कुल नौ दिन अभियान का संचालन किया जाये। इसके अनुभवों की साझेदारी और समीक्षा के दो दिवसीय सिलसिले से गुजर कर निर्मल अभियान के प्रारूप और उसके समन्वयन के तंत्र को अंतिम रूप दिया जाये। अभियान के तीन सदस्यीय 16 निर्मल आग्रही परिवारों का गठन किया जाये। इनमें 12 परिवार अभियान के अगुआ दस्ते के तौर पर होंगे और जो तीन-तीन परिवारों के चार साझा परिवारों की कड़ी होंगे, दो-दो साझा परिवार पुनः दो परिवार समूहों में बंधे होंगे। बाकी चार परिवार पूरक/फालोअप गतिविधियों से जुड़ेंगे, अभियान के असर को बरकरार रखे जाने का आधार मजबूत करेंगे, गांव स्तर पर अभियान से जुड़नेवालों को एकजुटता और पहलकदमी के लिए उत्प्रेरित करेंगे। अभियान की रीढ़ कुल 22 सदस्यीय होगी। इसमें होंगे—16 निर्मल आग्रही परिवारों के मुखिया, तीन-तीन परिवारों के चार साझा मुखिया, छह-छह परिवारों से मिल कर बने दो परिवार समूहों के आला मुखिया। इस तरह निर्मल आग्रह अभियान का समग्र परिवार 54 सदस्यीय होगा। बेहतर होगा कि यह कार्यभार चौकी में जारी निर्मल आग्रह अभियान के अंतिम दौर के तौर पर पूरा किया जाये।

ताकि नियमित अभियान अधिकाधिक परिपक्व और प्रभावी बन सके, कि उसकी पहचान बन सके, कि उसकी गूँज दूर-दूर तक सुनी जा सके।

दूसरे जिलों में भी निर्मल आग्रह के प्रयोग को दोहराये जाने की योजना तैयार की जाये। इसके लिए सबसे पहले संबंधित सरकारी अधिकारियों को निर्मल आग्रह की अवधारणा से पूरी तरह परिचित और सहमत कराया जाये। यह अभियान के सुचारु संचालन और उसके बेहतर नतीजों की सुनिश्चितता के लिए जरूरी है।

इसके समांतर 'निर्मल आग्रह' पुस्तिका का छत्तीसगढ़ी रुपांतरण (अनुवाद नहीं) किया जाये। रुपांतरण के पहले प्रारूप के विकास में चुनिंदा निर्मल आग्रहियों को शामिल किया जाये। बाद में छत्तीसगढ़ी लेखकों के सहयोग और सुझाव से उसे अंतिम रूप दिया जाये। यह कार्यभार कोई सात दिनों के निवेश की मांग करता है।

निर्मल आग्रह अभियान का गीत सबकी जुबान पर चढ़ा और उसने हर उम्र के लोगों को बांधने का काम किया। खेल गीत भी बच्चों को आसानी से याद हो गये। गीतों के अभूतपूर्व और स्थाई प्रभाव की रोशनी में लोक रंग के साथ निर्मल गीतों को रचने, उसे धुनबद्ध करने, रिकार्ड करने और कैसेट-सीडी के रूप में उसके व्यापक इस्तेमाल की योजना बनायी जाये। यह कोई 12 दिन की प्रक्रिया होगी।

अभियान को व्यापक बनाये जाने की दृष्टि से वंचित समुदायों की मजबूती के लिए प्रतिबद्ध गैर सरकारी संस्थाओं को भी अभियान का साझीदार बनाया जाये। इसकी शुरुआत तीन दिवसीय प्राथमिक विमर्श से की जाये। कोशिश हो कि इसमें बैगा जैसे आदिम समुदायों की बेहतरी के लिए प्रयासरत संस्थाओं की भी सहभागिता बने। इसकी अगली कड़ी के तौर पर अभियान की विषयवस्तु के संदर्भ में संगठन निर्माण और जन शिक्षण के तरीकों पर फोकस और तीन चरणों में विभक्त प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण आयोजित किया जाये। प्रसंगवश, बिलासपुर, कवर्धा, रायपुर और लोरमी आदि जगहों पर अधिकार आधारित नजरिये के साथ सक्रिय संस्थाएं 'बिहान' के संपर्क में हैं। 'बिहान' उत्तर प्रदेश के 12 जिलों में कार्यरत सामाजिक संस्थाओं, सामुदायिक संगठनों और व्यक्तियों की साझा पहल का मंच है और आवाज़ इस मंच का संस्थापक/अगुवा सदस्य है। इस जरूरी पहल में हाथ बंटाने के लिए 'बिहान' रजामंद भी है।

- अवधारणा और संयोजन : आवाज़, लखनऊ